पद २

(राग: देस - ताल: धुमाळी)

जो जो जो रे प्रभुराया। तव स्फूर्ती झाली ही माया।।धु.।। प्रथम आदिनारायण। तोचि पद्मज अत्रि जाण। मग दत्तात्रेय चिद्धन। माणिकरूपें प्रगटोन। उद्धरिलें पापी जना या।।१।। त्या मूलप्रकृति मायेसी। तो तूंचि प्रतिबिंबलासी। त्वरेने सगुण जाहलासी मग त्वां केलें या सृष्टीसी। बहु झालासी दीन ताराया।।२।। पाळणा मानसमंदिरी। हालवी भक्तिसुंदरी। हातीं धरोनि प्रेमदोरी। मनोहर हृदया अंतरीं। राजाधिराज माणिक गुरुवर्या।।३।।